राष्ट्रीय हिंदी दैनिक

नई दिल्ली एवं लखनऊ से प्रकाशित

जर्नलिज़्म टुडे

वर्ष: 13 ■ अंक: 42 ■ नई दिल्ली ■ शनिवार, 10 मई 2025 ■ पृष्ठ 08 ■ मूल्य: 1 रुपये Email : journalismtoday7@gmai

साहित्य अकादेमी द्वारा रवींद्रनाथ ठाकुर की जयंती पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन

जर्नलिज़्म टुडे, संवाददाता

नई दिल्ली : साहित्य अकादेमी द्वारा साहित्य मंच कार्यक्रम में रवींद्रनाथ ठाकुर की जयंती के अवसर पर प्रकृति और पर्यावरण पर रवींद्रनाथ ठाकुर विषयक विमर्श का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रख्यात अंग्रेजी लेखिका मालाश्री लाल ने की तथा राधा चक्रवर्ती, रेवा सोम और रेखा सेठी ने अपने अपने आलेख प्रस्तुत किए । अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में मालाश्री लाल ने कहा कि रवींद्रनाथ ठाकुर हमेशा अपनी जयंती पर एक कविता लिखते थे। उनके जीवन पर प्रकृति और संगीत का बेहद प्रभाव था। इस प्रेम के चलते ही उन्होंने शांतिनिकेतन के रूप में प्रकृति के बीच पढ़ने पढ़ाने का अनोखा संकल्प लिया था। उन्होंने उनकी कहानियों में भी प्रकृति वर्णन की बात की। आगे उन्होंने कहा कि यह खुशी की बात है कि रवींद्रनाथ ठाकुर के लेखन का सभी भारतीय भाषाओं और विदेशी भाषाओं में अनुवाद होने के कारण आज जब प्रकृति सबसे ज्यादा दयनीय स्थिति में है तब प्रकृति और पर्यावरण के प्रति उनकी प्रतिबद्धता हमें नए विकल्प अपनाने के प्रति सकित कर रही है। राधा चक्रवर्ती ने गीतांजलि से उदाहरण देते हुए कहा कि वह अपने गीतों में मानवीय जीवन और हमारे ब्रह्मांड के साथ चक्रीय संबंध को एक दूसरे का पूरक मानते हैं और उसमें कोई मकोड़े जैसे मकड़ी, चींटी आदि से भी सीखने की प्रेरणा देते हैं। इतना ही नहीं वह मानव की प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी को भी चिह्नित करते हैं । विश्व भारती की तुलना तपोवन की प्राचीन परंपराओं से करते हुए ही उन्होंने शांति वन में प्रकृति से जुड़े त्योहारों को मनाना शुरू किया। वे मानव के पूंजीवाद और भोगवादी आचरण को सभ्यता का विरोधी मानते थे। रूसवीज में उन्होंने बड़े बांधों का विरोध भी किया । काफी पहले प्रकृति को लेकर उनके व्यक्त किए गए विचार आज भी प्रासंगिक हैं । रेवा सोम ने टैगोर के गीतों में प्रकृति चित्रण पर अपनी बात रखते हुए कहा कि उनके 283 गीतों में प्रकृति का वर्णन है। शांतिनिकेतन में भी उन्होंने ऋतुओं के परिवर्तन के आधार पर शरद उत्सव, हेमंत उत्सव, बसंत उत्सव और मानसून उत्सव मनाने की परंपरा आरंभ की। विश्वकर्मा दिवस पर स्थानीय आदिवासियों की बनाई वस्तुओं को खरीदने का प्रयास भी प्रकृति से निरंतर संतुलित संबंध बनाने का तरीका था।